ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

तिथि–10 जुलाई 2018
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११९
युगाब्द-५११९, अंक-१०२, वर्ष-१२
आषाढ़, विक्रमी २०७५ (जुलाई 2018)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायतः। न रिष्येत् त्वावतः सखा॥ –ऋ० १। ६। २०। ३

व्याख्यान–हे सोम राजन्नीश्वर! तुम (अघायतः) जो कोई प्राणी हम में पापी और पाप करने की इच्छा करनेवाले हों, (विश्वतः) उन सब प्राणियों से हमारी (रक्ष) रक्षा करो। जिसके आप सगे मित्र हो, (न रिष्येत्) वह कभी विनष्ट नहीं होता। किन्तु हमको आपके सहाय से तिलमात्र भी दुःख वा भय कभी नहीं होगा। जो आपका मित्र और जिसके आप मित्र हो, उसको दुःख क्योंकर हो?

सम्पादकीय

अन्धविश्वास - मोक्ष

सृष्टि के प्रारम्भ से ही प्रत्येक प्राणी की मृत्यु होना निश्चित है तो जन्म होना भी निश्चित है। जन्म के उपरान्त सुख है, दुख है, राग है, द्वेष है, रोग है, शोक है, ईर्ष्या है तो प्रभाव और अभाव भी है। अर्थात् यदि यह बात की जाये कि जीवन काल में क्या-क्या है? तो निश्चित ही अधिकांश लोग कुछ न कुछ न्यूनाधिक बता ही देते हैं, पुनरपि मृत्यु के उपरान्त क्या है? यह प्रश्न अनुत्तरित तो नहीं, पुनरपि यदि वेद और वेदानुकूल ऋषियों-मुनियों की सनातन कालजयी विद्या को एक ओर रख दें तो वह कपोलकल्पित, अवैज्ञानिक, अन्धविश्वास और मनमानी अवधारणाओं पर ही आधारित है। जैसे- पुराणोक्त स्वर्ग, कुरानोक्त बहिस्त (जन्नत) तथा बाईबिल में कथित हैवन है। यह स्वर्ग, जन्नत और हैवन में समानरूप से जो सुख की सामग्री गिनाई गयी हैं, वह भी समान ही हैं, कहीं नाम अप्सरा है तो कहीं हूरें अर्थात् जो पदार्थ इस संसार में हैं किन्तु सभी को सुलभ नहीं है (किन्तु कुछ मुठ्ठी भर धनपतियों को, सत्ताधारियों को सुलभ हैं) तब धर्म के नाम पर आडम्बर रचने के लिए विवेकहीन रचनाकारों ने, पैगम्बरों और देवदूतों ने सामान्य जीवन जीने वाले मानवों को एक लोभ की लौहश्रृंखला से बांधा और कहा कि-मत घबराओं! तुम यह करो, वह करो और बदले में तुम्हें स्वर्ग में यह सब साम्रगी मिलेगी। परिणामतः मृत्यु के बाद मिलने वाले फल के लोभ में विवेकशून्य लोग जेहाद करने लगे, मरने और मारने लगे, यहाँ तक कि कतिपय मजहबों में आत्महत्या तक करने लग गये। दूसरी ओर इन्हीं पुराण, कुरान और बाइबिल आदि ने मृत्यु के ही उपरान्त कुछ और भी कपोल-कल्पित सत्ताओं का प्रचार-प्रसार किया। जिनमें भूत-प्रेत, चुडैलें, डाकिनी, शाकिनी, जिन्न, शैतान, घीष्ट, घोष्ट आदि बताये गये ताकि जो स्वर्ग, जन्नत, हैवन के लोभ में न फंसे, उसे इन भूत-प्रेताअदि का भय दिखाकर साधा जा सके। परिणाम स्वरूप सम्पन्न और मध्यम आय वर्ग के लोग तो जन्नत आदि के लोभ में साध लिये गये, जो निर्धन जन, दलित जन मिले, जो संसारिक पदार्थों के अभाव में शिक्षा के अभाव में, चिकित्सादि के अभाव में थे वे सभी भूत-प्रेतादि का आतंक दिखाकर भयाक्रान्त कर लाईन में खड़े कर दिये गये, जिससे ओझाओं, तान्त्रिकों, मुल्लाओं और पास्टरों-पादरियों के दिन मजे से बीतने लगे। किन्तु इनके मजे के लिए लाखों लोगों का यह मानव जीवन जिसे सुरदुर्लभ कहा गया था, बर्बाद होने लगा। वे बेचारे जन्नत के लोभ में आतंकवादी, जेहादी बन

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

गये, शरीर पर बम बांधकर निकल पढ़े, हूरों के लोभ में, तो दूसरी ओर लाखों लोग शैतान का साया निकलवाने को भटकने लगे। सम्पूर्ण विश्व में अरबों-खरबों रुपये का बाजार खड़ा हो गया, विज्ञापन करने वालों (एडवरटाइजमेंट) की बाढ़ आ गयी और शोषण पर खड़े बाजार ने दौड़ लगाने में कोई कसर न छोड़ी।

पाठकगणों! सम्प्रति दिल्ली के बुराड़ी क्षेत्र में घटित घटना जिसमें एक ही परिवार के ग्यारह लोगों ने, तीन पीढ़ियों ने एक साथ मृत्यु को गले लगा लिया (अब तक की जांच के अनुसार) वे उसी उपरोक्त वर्णित कल्पना संसार में विचरण करने वाले लगते हैं, प्रचार माध्यमों से मिल रही सूचनाओं के अनुसार घर के रजिस्टरों में लिखित साम्रगी के आधार पर कहीं पिता की आत्मा का सम्पर्क, कहीं पांच-पांच आत्माओं के सम्पर्क की दास्तान, थोड़ी सी सांसारिक अभिलाषाओं की पूर्ती के लिए उन तथा-कथित आत्माओं के प्रति दीवानगी और परिणाम स्वरूप घर का खाली हो जाना। बूढ़ी माता से लेकर मासूम बच्चों तक की मृत्यु। इन्हीं कल्पना लोक की सत्ताओं के मध्य विचरने के अतिरिक्त कुछ नहीं लगता। किन्तु इस घटना के परिपेक्ष्य में प्रचार माध्यमों (मीडिया) का **'मोक्ष'** शब्द को घसीटना, मोक्ष शब्द को बदनाम करना, ग्यारह लोगों की मृत्यु से भी भयानक लगता है, इसमें चार वर्ण, चार आश्रम और चार पुरुषार्थ हैं, उनमें भी पुरुषार्थ चतुष्टय में शिखर पर है मोक्ष।

करोड़ों वर्षों के इतिहास में कहीं भी मोक्ष के लिए आत्महत्या का कोई भी वर्णन नहीं है, मोक्ष का तात्पर्य है कि सांसारिक वस्तुओं से, सांसारिक ऐषणाओं से, यहाँ तक कि जन्म मृत्यु के चक्र को भी भेदकर ऊपर उठ जाना, स्वयं को अर्थात् आत्मा को परमात्मा से मिला लेना। और उसके लिए हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। जिसके लिए योगदर्शनकार ने **''अत्यन्त पुरुषार्थ''** कहा है। हमारे वैदिक धर्म में पलायन नहीं, पुरुषार्थ है, मरण नहीं, जीवन है। यहाँ स्वर्ग मरने के उपरान्त नहीं, इसी जन्म में, इसी संसार में है। सुख विशेष का नाम ही स्वर्ग है और दुख विशेष का नाम ही नरक बताया गया है। किन्तु आज वैदिक सिद्धान्तों के अभाव में लोग न जाने कैसे-कैसे अज्ञान, अन्धविश्वास के शिकर हो जाते हैं। इस सारे संसार के अज्ञान और अन्धविश्वास से एक ही बचता है, एक ही बच सकता है, वह है-**आर्य!**

अत: आर्यो! आर्याओं! अपने चारों ओर से खोजो ऐसे लोगों को, ऐसे परिवारों को, जो अन्धविश्वास की, अज्ञानता की गहरी खाई में गिर हुए हैं, गिरने को तैयार हो रहे हैं गिरने की सम्भावना से ग्रस्त हैं। यदि आपने इनके परिवार के एक भी व्यक्ति को बचा लिया तो वह पूरे परिवार को बचा ले जायेगा और हमारी सभ्यता के स्तम्भ भी सुरक्षित रह पायेंगे।

विभिन्न स्थानों पर राष्ट्रीय आर्यछात्र सभा द्वारा आयोजित पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुलों की गतिविधियाँ

विकास का वास्तविक अर्थ

-आचार्य वेद प्रकाश

मनुष्य निरन्तर विकास करता जा रहा है या मनुष्य का लगातार पतन होता जा रहा है। हम देख रहे हैं कि टेक्नालोजी के क्षेत्र में, चिकित्सा के क्षेत्र में या पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में आज नए-नए अनुसंधान हो रहे हैं। यदि केवल पिछले 100 वर्ष का भी अवलोकन किया जाए तो भी टेक्नोलाजी के क्षेत्र में भारी परिवर्तन देखने को मिला है। 100 वर्ष पूर्व यदि कोई व्यवसाय के सिलसिले में गाँव छोड़कर नगर जाता था तो घर वालों की कुशलता का समाचार चिठ्ठी पत्री से ही मिल पाता था। Emergancy (आकस्मिक) की स्थिति में खर्चीला Telegram भेजा जाता था Mother Sick Come Soon इत्यादि। लेकिन इसी संदेश भेजने के क्षेत्र में आज की स्थिति है कि चाहे कोई सात समुन्द्र पार ही क्यों न हो Internet, Smart phone व 4G Technology के सहयोग से भिन्न-भिन्न देशों में रह रहे परिवार के अलग-अलग सदस्य Video Calling करते हैं व ऐसा प्रतीत होता है जैसे आपस में कोई दूरी हो ही नहीं! इस Smart Phone में भी इतनी सुविधाएं हैं कि घडियां कलकुलेटर, Alarm, Stopwatch, Compass, Camera, Laptop की अलग से मांग ही समाप्तप्राय: हो गई है...। और इतनी सुविधाओं वाला Smart Phone हमारी मुठ्ठी में। तो क्या इसे मनुष्य का विकास माना जाए? कुछ लोग कहेंगे कि क्यों न माना जाए विकास.. ..। आप चिकित्सा के क्षेत्र मे देख लो..., 100 वर्ष पूर्व हैजा व मलेरिया से पूरा का पूरा गांव ही चपेट में आ जाता था, सैकड़ों की संख्या में लोग एक झटके में असमय मृत्यु के शिकार हो जाते थे, तो वहीं अपने देश ही में अकेले लाखों की संख्या में लोग पोलियों से त्रस्त होकर पूरा ही जीवन विकलांग होकर दीन-हीन व असहाय होकर गुजारने को मजबूर होते थे। लेकिन आज चिकित्सा के खेल में एक से बढ़कर एक चमत्कार नित्य दिखाई दे रहा है। पोलियों जैसे रोगों का भी लगभग उन्मूलन हो चुका है वह भी भारत जैसे 125 करोड़ के विशाल देश में। Open Heart Surgery जैसे आपरेशन साधारण हो चले हैं। तो क्यों न इसे हम मनुष्य का निरन्तर विकास मानें? आखिर सुख सुविधा के साधन इतने बढ़ गए हैं! तमाम प्रकार के राडार व सैटेलाईट मौसम की पूर्व सूचना इतना सटीक देने लगे हैं कि तूफान बारिश आदि का भी पूर्वानुमान हम बड़ी सजहता से लगाने लगे हैं। देखिए, इससे प्राकृतिक आपदा से होने वाली मौतों पर भी हम काफी हद तक नियंत्रण पाने लगे हैं। कितना सहज हो चुका है हमारा जीवन! आखिर यह निरन्तर विकास की झलक ही तो है। सैकड़ों मंजिल ऊँची बुर्ज खलीफ जैसे भवनों में विश्व की वे सभी अत्याधुनिक सुख सुविधाएं उपलब्ध हैं जिसकी प्राप्ति को (एक छत के नीचे) किसी Mini Heaven स्वर्ग की झलक से कम नहीं कहा जा सकता।

100 वर्ष के परिर्वतन को हम विकास क्यों न कहें? एक दृष्टान्त पर विचार करिए- यदि कोई किशोर 16 वर्ष की अवस्था में सन् 1940 में कोमा में चला गया हो, तब जब न कारें थी न विमान, न सड़कें थी, न ऊँचे भवन, यदि उपलब्ध भी थी तो नगर में 10-20 प्रभावशाली लोगों के पास। यदि वह किशोर जो कोमा में 1940 में चला गया था, वह आज होश में आ जाए तो वर्तमान में टीवी के सैकड़ों चैनल को देखकर वह सहम जाएगा। आधुनिक सड़कों पर विचित्र गाड़ियों को देखकर, लोगों की मुठ्ठी में मोबाईल देखकर तब का किशोर आज समझ ही नहीं पाएगा कि हम कहाँ आ गए? तो क्या वह कोमा से बाहर आया व्यक्ति बरबस ही, अनायास ही इस परिवर्तन को विकास कहने को मजबूर न होगा।

लेकिन ठहरो! क्या यह सच में विकास है? विकास किसे कहना चाहिए? यह तो निश्चित रूप से सत्य है कि साधन तो खूब बढ़ गए हैं, अप्रत्याशित रूप से बढ़ गए हैं पर ठहरिए! क्या इन विविध साधनों से हमारे जीवन में सुख बढ़ा है? शान्ति बढ़ी है?

एक बार यदि हम मुड़कर 5000 वर्ष पूर्व देखें- हमारी संस्कृत भाषा, हमारा आयुर्वेद, दर्शनों की आलौकिक विद्या (जिसमें केवल आधा-अधूरा योग ही विश्व को अचम्भित किये दे रहा है) आदि।

गुरुकुलीय विद्या या यूं कहें कि पठन-पाठन के अभाव से हमारे सम्मुख ऋषियों की विद्या उपस्थित नहीं है। हम संस्कृत भाषा की अलौकिक सत्ता पर विचार अगले अंक में करेंगे, पर अभी सिर्फ यह लिख दे रहे हैं कि अपवादों Exception से रहित होने के कारण NASA जैसे संस्थानों में बीसियों वैज्ञानिकों की टीम संस्कृत भाषा पर Software विकसित कर रही है। जो सबसे ज्यादा (अन्य भाषाओ की तुलना में) सरल, सहज और छोटी है।

आयुर्वेद को तो अभी ठीक से पूरा पढ़ा भी नहीं जा सका है। BAMS के डॉक्टर्स संस्कृत नहीं जानते फिर भी दादी नानी की कथाओं को सुनकर भी किए जाने वाले चिकित्सा से लोग मन्त्रमुग्ध हैं। कल्पना करिए जब चरक-सुश्रुत को उसी भाषा में अर्थात् संस्कृत में डॉक्टर पढ़ सकेंगे तो निश्चय जानिए कि लोगों का जीवन ही बदल जाएगा। दर्शन विद्या भी 50-100 लोगों तक सीमित है। अन्यथा जिस दिन हमारा सामर्थ्य वेद को पढ़ने का हो जाएगा, जिस दिन अंगो व उपांगो सहित देवभाषा में वेदों के ज्ञाता जब शास्त्रर्थ करेंगे तब हमारी उन्नति का पता चलेगा। यह सृष्टि आदि काल में व्यवस्थित थी। निरन्तर ज्ञान का ह्रास होता गया, स्वास्थ्य का ह्रास होता गया, हम प्रकृति से दूर हो गए, आनन्द से दूर हो गए, कृत्रिमता की तरफ बढ़ गए, विनाश की तरफ बढ़ गए। साधनों का विकास तो कर लिया लेकिन उन साधनों का भी सुख के लिए कम और दुख के लिए अधिक प्रयोग हो रहा है। अत: अपनी मूल विद्या को जानें जिससे वास्तव में विकास के अर्थ को जान सकें और सही में विकास कर सकें।

अंधविश्वास-कारण व निवारण

-आचार्य सतीश

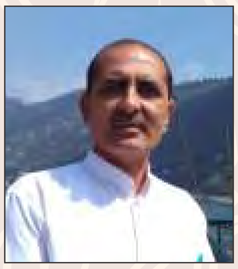

कोई परम्परा, विचार या क्रिया तब कुरीति कहलाती है जब उससे व्यक्ति को हानि पहुँचती है और दुख का कारण बनती है। और जब यही परम्परा, विचार या क्रिया व्यापक रूप ले लती है और समाज में अनेकों के दुख का कारण बन जाती है तो उसी को सामाजिक कुरीति कहा जाता है। वैसे तो आज हमारे समाज में अनेक कुरीतियाँ व्याप्त हैं लेकिन दो कुरीतियाँ ऐसी हैं जो बहुत ही व्यापक हैं- इतनी व्यापक है कि केवल हमारे समाज में ही नहीं अपितु पूरे देश भर में वे लोगों को हानि पहुँचा रही हैं अर्थात् ये राष्ट्रव्यापी कुरीतियां हैं और अगर यह कहें कि हमारे ही राष्ट्र में नहीं अपितु पूरी मानव जाति इनसे पीड़ित है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। सारी मानव जाति आज इन बुराइयों से पीड़ित है, कहीं कम, कहीं ज्यादा। और वे दो कुरीतियां है अंधविश्वास और व्यसन अर्थात् नशा।

संसार भर में मानवजाति को इनसे बड़ा दुख पहुँच रहा है, हानि हो रही है। यदि हम अपने आस-पास ही देखते हैं, तो अनेकों लोग इनसे पीड़ित हैं, दुख उठा रहे हैं, अपना समय, सामर्थ्य नष्ट कर रहे हैं इन बुराईयों के कारण से। और जो-जो व्यक्ति इनसे बचा हुआ है वह अवश्य ही उन्नति के पथ पर है।

आइये इस समय अंधविश्वास पर चर्चा करते हैं, इससे होने वाली हानियों को, दुख को देखते हैं। आज अनेकों लोग इससे पीड़ित हैं। अंधविश्वास रूपी राक्षस की चपेट में आया हुआ व्यक्ति पता नहीं अपना कितना समय व सामर्थ्य ऐसे निरर्थक कार्यों में लगा देता है जिसका कोई परिणाम नहीं निकलता, तब भी यह नहीं कि वह उसको छोड़ देता है अपितु किसी नए अंधविश्वास में धंस जाता है और फिर उसी धुन में लगा रहता है। कितना अपना धन इन सब कार्यों में लगा देता है। इसकी एक और विशेषता यह है कि यह नए-नए रूप में आता रहता है और अनेक लोगों को अपनी चपेट में ले लेता है। अंधविश्वास की क्रियाओं में सम्मिलित व्यक्ति इतना भयभीत हो जाता है कि वह किसी की नहीं सुनता और अपनी बहुत बड़ी हानि कर बैठता है और ऊपर से समस्या यह भी है कि ऐसा व्यक्ति सब कुछ गंवाकर भी जो थोड़ा बहुत बच जाता है उसको भी यही समझता है कि इसी के कारण से मेरा इतना बच गया। लोग लाखों रूपये ऐसे अनुष्ठानों में खर्च कर देते हैं जिनका कोई उपयोग नहीं होता। प्रतिदिन घंटो का समय व कई बार महीनों का समय अपना उसी की भेंट चढ़ा देते हैं। परिवार के परिवार बर्बाद हो जाते हैं, बालकों की शिक्षा-दिक्षा बन्द हो जाती है। लोगों के निवास स्थान बदल जाते हैं, रोजगार चले जाते हैं, उसी की चपेट में आकर पारिवारिक सम्बन्ध तक खराब हो जाते हैं और अंधविश्वासी व्यक्ति उसी को अपनी नियति मानकर चुपचाप पतन की तरफ बढ़ता रहता है और ऐसे में ही अपना जीवन बिता देता है तथा कईयों की तो पीढ़ियां उसी में खप जाती हैं। जितनी भी हानियों पर यहाँ हमने चर्चा की है उस प्रकार के अनेकों उदाहरण आप अपने चारों ओर देख सकते हैं, ऐसे उदाहरण समाज में बहुतायत में है।

आइए अब इसके कारणों पर चर्चा करते हैं- यह अंधविश्वास रूपी दानव जो मानवजाति को हानि पहुँचा रहा है आज से नहीं तब से है जब से मतों की भिन्नता प्रारम्भ हुई। जब से मानव जाति ने एक सत्य मत को छोड़कर भिन्न-भिन्न मतों को अपनाना प्रारम्भ किया तभी से है। इस संसार में बहुत कुछ प्रत्यक्ष दिखाई देता है, हमारी इन्द्रियों से अनुभूत होता है, लेकिन जो इन्द्रियों से प्रत्यक्ष नहीं, जो अप्रत्यक्ष है उसको जानने के लिए जब तक हम तर्क-बुद्धि का उपयोग करते रहे और तर्क-बुद्धि व प्रमाणों से पुष्ट होने पर ही उसे स्वीकार करते रहे तब तक हम अंधविश्वास से बचे रहे। जो प्रत्यक्ष में अनूभूत है उसके पीछे के कारणों को पता लगाने के लिए भी जब तक तर्क-बुद्धि व प्रमाणों से पुष्टि आवश्यक है अन्धविश्वास से बचने के लिए अर्थात् प्रत्यक्ष के पीछे के कारणों और अप्रत्यक्ष को जानने के लिए तर्क व बुद्धि का प्रयोग छोड़ते ही अंधविश्वास प्रारम्भ हो जाता है। जब तक हम इसका प्रयोग करते रहे अर्थात् दर्शन शैली में जब तक मानवजाति का चिन्तन रहा, तब तक अंधविश्वास नहीं प्रारम्भ हुआ। प्रत्यक्ष के पीछे के कारणों को जानने समझने का कार्य विज्ञान ने किया और अप्रत्यक्ष को समक्षने का कार्य दार्शनिकों का रहा। विज्ञान ने तो कार्य-कारण के सिद्धान्त से अपने आप को जोड़े रखा लेकिन दर्शन के क्षेत्र में कालान्तर में ऐसे-ऐसे लोग दार्शनिक और मार्गदर्शक बन गए जन्होंने बुद्धि-तर्क और प्रमाणों की कसौटी को ही छोड़ दिया और अपने-अपने मत चला दिये। इसी का परिणाम रहा कि ऐसे काल में अनेकों वैज्ञानिकों को यूरोप में मार डाला गया, जिन्होंने उनकी स्थापित मान्यताओं को तर्क की कसौटी पर कसा और चुनौती दी। ये अन्धविश्वास की पराकाष्ठा रही है। दार्शनिक विषयों के चिन्तन में इसी मूल सिद्धान्त की अवेहलना से अंधविश्वास फैलता चला गया और इतना फैला कि लोगों को अपनी जकड़ में इस स्तर तक ले लिया कि वैज्ञानिक विषयों के चिन्तन में भी सामान्य लोग कारण-कार्य के सिद्धान्त की अवहेलना करने लग गए। तो अंधविश्वास क्या है? यदि सीधा-सीधा कहें तो **बिना कार्य-कारण को जाने, बिना विचार किए, बिना तर्क की कसौटी पर कसे किसी भी बात का स्वीकार कर लेना ही अंधविश्वास है।**

ये तो हैं कुछ सैद्धान्तिक कारण-आइए अब वर्तमान में इसके पीछे जो कारण है और जिनके कारण से यह अंधविश्वास रूपी रोग समाज की नस-नस में घुस चुका है उस पर भी चर्चा कर लेते हैं- वर्तमान में यदि देखें तो लोगों की अज्ञानता, पुरुषार्थहीनता (जल्द से जल्द अपनी धन आदि की कामना को पूर्ण करने की लालसा), भाग्य को प्रमुखता देना। और सबसे बड़ा कारण है स्वार्थ अर्थात् अनेक लोगों का अपनी जीविका को इससे जोड़ लेना, जिससे वे नित नए प्रयोग और नित नए तरीके से लोगों को अंधविश्वास में धकेलते रहते हैं और अपने स्वार्थ की सिद्धि करते हैं। एक ओर महत्वपूर्ण कारण सत्य को जानने वाले, सिद्धान्त को समझने वाले और इस अंधविश्वास की वास्तविकता को जानने वालों की निष्क्रियता अर्थात् सत्य का प्रचार न होना या ऐसे लोगों की उदासीनता। इन सब कारणों में वर्तमान में जो सबसे महत्वपूर्ण कारण है स्वार्थ का। अनेक लोगों द्वारा इसे अपनी जीविका के रूप में अपना लेना, व्यापार (बिजनेस) बना लेना। इसी कारण से यह व्यापार रूपी अंधविश्वास बेताल की तरह समाज की पीठ पर सवार हो गया है। वास्तव में यह जीविका नहीं अपितु सीधे-सीधे लोगों से ठगी है। ऐसे ही लोगों ने इसे जीवन के हर क्षेत्र में व्यापक कर दिया है और विद्या व ज्ञान का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं बचा जहां इन्होंने अपनी घुसपैठ न बना ली हो। कोई क्षेत्र इससे अछूता नहीं बचा जैसे- वास्तु, परस्पर के सम्बन्ध, रोजगार, शिक्षा, व्यवसाय, भविष्यफल, जन्म, मृत्यु, गृहप्रवेश, भौतिक संसाधन की प्राप्ति, वरिष्ठों का सम्मान आदि आदि। समाज पिस रहा है, केवल कुछ लोग बचे हुए हैं जो सिद्धान्त को भले ही पूरा न समझते हों लेकिन अपनी तर्क बुद्धि व प्रमाण का प्रयोग करते हैं।

तो इससे बचने का उपाय क्या हो? बचने का उपाय है सिद्धान्त को ठीक से समझना अर्थात् प्रत्यक्ष के पीछे का कारण व अप्रत्यक्ष के पीछे को जानने के लिए तर्क बुद्धि व प्रमाण का प्रयोग। बिना इसके किसी भी बात को स्वीकार न करना। यही हमारे ऋषि-मुनि करते रहे हैं, हमारे दर्शनकार करते रहें हैं। उन्होंने

शेष अगले पृष्ठ पर...

पिछले पृष्ठ का शेष...

किसी सिद्धान्त को सत्य की कसौटी पर कसे बिना स्वीकार नहीं किया। इसी कारण से जब तक हम अपने उन ऋषियों के बताए सिद्धान्तों पर चलते रहे हम अंधविश्वास से बचे रहे और जबसे हमने उनके सिद्धान्तों को छोड़ा तो न केवल हम अंधविश्वास में धंसते चले गए अपितु इतने दीन-हीन हो गये कि अपनी स्वाधीनता को भी न बचा पाए। इन्हीं ऋषि-मुनियों के सिद्धान्तों को वर्तमान के समय में ऋषि दयानन्द के द्वारा प्रतिपादित किया गया जिससे अंधविश्वास से बचा जा सकता था। जिन-जिन लोगों ने उनके विचारों को, विद्या को अपनाया उस पर चले, वे सब अंधविश्वास से बच गये। अंधविश्वास से बचने का उपाय आर्य सिद्धान्त ही हैं। चाहे जानकर अपनाओ, चाहे अनजाने! जानकर अपनाओगे तो अंधविश्वास से बचने के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी उन्नति के पथ पर आगे बढ़ोगे। ऋषि दयानन्द ने न तो स्वयं किसी सिद्धान्त को बिना तर्क-बुद्धि व प्रमाण के स्वीकार किया और न ही अन्यों को ऐसा करने को कहा। उनका कोई भी सिद्धान्त ऐसा नहीं जो तर्क-बुद्धि व प्रमाण की कसौटी पर खरा न उतरे। यही सिद्धान्त आर्यों के सिद्धान्त हैं। अर्थात् आर्य सिद्धान्त जितने व्यापक होंगे अंधविश्वास उतना संकुचित होगा। आर्य सिद्धान्तों को मानने व उन पर चलने वाले सभी को यह चुनौती देते हैं कि उनका एक-एक सिद्धान्त तर्क, बुद्धि व प्रमाण की कसौटी पर कसा जाए और तभी उसे स्वीकार किया जाए। जो सिद्धान्त इस कसौटी पर खरा न उतरे वह आर्य सिद्धान्त नहीं हो सकता। अतः आर्यो, समाज को यदि इस अंधविश्वास रूपी राक्षस से बचाना है जो आर्य सिद्धान्तों की व्यापकता ही इसका उपाय है और वह किसी रूप में हो। जितने अधिक लोगों तक ये विचार पहुँचेंगे, दार्शनिक विषयों को लोग ठीक से समझेंगे, उतने ही लोग अंधविश्वास से बचेंगे व ठगों की दुकानें बन्द होंगी, समाज का उपकार होगा और पूरी मानवजाति के लिए एक मार्ग प्रशस्त होगा।

मुगल काल की स्थापत्य कला का सच

-सोनू आर्य, हरसौला, कैथल

स्नान हेतु भारतीय नगरों में लेन, घाटों को देखकर अलबरुनी का कहना है कि इस कला में भारतवासी (हिन्दुओं) ने अत्याधिक श्रेष्ठता प्राप्त कर रखी है। वह इतनी अधिक श्रेष्ठ कला है कि जब हमारे मुस्लिम लोग उसे देखते हैं तो आश्चर्य करते हैं और उस जैसी कोई श्रेष्ठ वस्तु बनाने में सर्वथा अक्षम है। अलबरुनी की ये पक्तियाँ स्थापत्य कला के विषय में भारतीयों की समर्थता एवं मुस्लिमों की असमर्थता को प्रदर्शित कर रही है। किन्तु उसके बावजूद भी मुस्लिम पूर्वकाल के भारतीय भवनों जिनका अधिग्रहण तो मुस्लिम शासकों द्वारा किया गया, को मुस्लिम शासकों से जोड़ उनका बड़ा यश इतिहासकारों द्वारा गाया जाता है। अब ये विचारणीय है कि यह भवन वास्तव में मुस्लमानों द्वारा निर्मित हैं अथवा अधिग्रहण मात्र।

1.) **अप्रामाणिक इतिहास**- मुगलकाल में जिन दरबारी लेखकों के द्वारा लिखे गए ग्रन्थों के आधार पर भारतीय भवनों को मुगलों द्वारा निर्मित बताया जाता है, उस इतिहास का विचार भी यहाँ आवश्यक है। वर्तमान में इतिहासकारों द्वारा आर्यसम्राट पृथ्वीराज चौहान के इतिहास पृथ्वीराज रासो को दरबारी लेखक (चन्द्रबरदाई) द्वारा लिखा गया, आश्रयदाता का योशोगान मात्र कहकर अप्रामाणिक माना जाता है। अतः मुगलकाल में भी दरबारी लेखकों द्वारा लिखे गए इतिहास को आश्रयदता का यशोगान समझकर अप्रामाणिक घोषित किया जाना चाहिए। इसी कारण महान इतिहासकार सर एच॰ एम॰ इल्लियट ने कहा कि भारत में मुस्लिम काल का इतिहास जानबूझकर किया गया रोचक धोखा है।

2. **वास्तुकला का आधार**- प्रथम तो यही कहना युक्तियुक्त है कि शिल्पकला में निपुणता हेतु लम्बे अनुभव, उच्च तकनीकि एवं उच्च विकसित प्रतिभाएं अनिवार्य हैं। उसके साथ-साथ विपुल धनराशि एवं शान्तिमय वातावरण भी आवश्यक है, अब विचार करें तो स्पष्ट हो जाता है कि मुगलकाल में उपरोक्त वर्णित आवश्यकताओं में से एक का दर्शन भी दुर्लभ था। क्योंकि लगभग सारा मुगलकाल युद्धों की मार-काट में ही बीता और खजाने खाली थे। जैसाकि विन्सेन्ट स्मिथ एवं डा॰ आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव ने कहा है कि एक बार अकबर के कोषागार में 18 रु॰ की अत्यल्प राशि भी नहीं रही थी। स्मरण रहे कि यह स्थिति महान कहे जाने वाले मुगल अकबर की है जिसके शासनकाल को शान्तिमय भी माना जाता है, पाठकगण विचारें की अन्य मुगल शासकों के काल में वित्त की क्या स्थिति रही होगी जबकि शासनकर्ता लगातार युद्धों में संलग्न रहे। यह भी मनोविज्ञान की बात है कि सुशिक्षित शासक ही अपने अभिलेख उत्कीर्ण कराते हैं, निरक्षर अंगुठा छाप नहीं। इसी कारण मुगल पूर्वकाल के भारतीयों के अभिलेख तो प्राप्त हुए हैं किन्तु मुगलों के नहीं। यह भी मानव की तुच्छ मानसिकता होती है कि वन विहार एवं भ्रमण के समय वहां भी लोग अपना नाम खोद आते है, मुगलकाल का वास्तविक इतिहास भी यही है। विन्सेन्ट स्मिथ ने प्रमाणित किया है कि अकबर एवं अन्य मुगलशासक शिल्पकारों एवं शिल्पलेखकों की पूरी फौज ही तैयार रखते थे जो उनकी आज्ञा पर हथियाए गए भवनों पर तुरन्त ही शिलालेख लिखकर लगा देवें।

3.) **अद्भुत विसंगतियाँ**- मुगलकाल में निर्मित कहे जाने वाले संभवतः हर एक उत्कृष्ट भवन की पहचान कब्र अथवा मकबरे के रुप में ही हुई है अब ये महान आश्चर्य है कि जब मरे हुए लोगों के लिए भव्य भवन बनाए गए तो उन्हीं के अनुरूप जीवित शासकों के लिए उनसे भी ज्यादा भव्य महल क्यों नहीं उपलब्ध होते। यही नहीं उपलब्ध भवनों में इस्लाम के विपरीत अनेक लक्षण पाए जाते हैं, जो सब के सब हिन्दू स्थापत्य के ही लक्षण हैं, यथा-स्तम्भ कोष्ठक, दीप स्तम्भ, भवनों का उत्तर दिशा की ओर द्वार, पुष्प, घन्टी, प्रस्तर एवं मूर्तियाँ आदि। यह भी विचित्रता ही है कि हिन्दूओं के प्रति घोर धृणा भाव रखने वाले विदेशी (जो थे भी भिन्न-भिन्न स्थानों से यथा- तुर्क, अफगानी, फारसी आदि) अपनी मनचाही कब्रों एवं मस्जिदों को हिन्दु निर्माण कला की पद्धति पर बनवाने के लिए क्यों एकमत हो गए। तथा उतने भव्य भवन बनवाने वाले एक-एक अभिलेख भी स्मारकों के साथ नहीं छोड़ गए।

4.) **वास्तविकता**- जिस प्रकार जहांगीर की न्याय जंजीर राजपूत की नकल मात्र थी उसी प्रकार मुगल पूर्वकाल के भवनों को मुगलों ने राजपूतों से बलात् छीना था। निर्माण किसी का भी नहीं करवाया गया। ताजमहल का निर्माता शाहजहां नहीं बल्कि चन्देल वंशीय राजा परमार्दी देव था। ताजमहल को शाहजहां ने मानसिंह के पौत्र जयसिंह से हथियाया था। माण्डवगढ़ (होशंगाबाद) का मकबरा जिसे अन्य पुरातत्ववेत्ता भी हिन्दू देवालय स्वीकार कर चुके हैं, की तरह ही ताजमहल भी एक हिन्दू देवालय था। आज भी यदि निष्पक्ष जांच हो तो सभी भवनों का सत्य सामने आ सकता है।

5.) **भारतीय स्थापत्य कला**- थोड़ा और विचार करें तो महत्वपूर्ण तथ्य यह निकलता है कि भारत में अति विशद और विद्वतापूर्ण शिल्प-शास्त्र या स्थापत्य विज्ञान रहा है, जैसाकि विशेषज्ञों द्वारा रामसेतु के विश्लेषण से है कि ये प्राकृतिक न होकर मानव निर्मित है एवं महाभारत काल में मय राक्षस द्वारा निर्मित भव्य इन्द्रप्रस्थ के निर्माण का वर्णन, है से सिद्ध होता कि भारतीयों (आर्यों) के पास महान स्थापत्य शास्त्र रामायण काल (लाखों वर्ष पूर्व) से लेकर मुस्लिम पूर्वकाल तक रहा है। किन्तु उसी के अनुरूप मुस्लिमों के पास स्थापत्य का कोई इतिहास नहीं है, इसी कारण भारतीय घाटों मात्र को देख उनकी आँखें चुन्धियाया करती थी।

अतः इन भवनों का भारतीयों द्वारा निर्माण तो संम्भव है किन्तु मुस्लिमों द्वारा यह सम्भव प्रतीत नहीं होता, क्योंकि यदि उन्हें अपनी वास्तुकला दिखाने का शौक था तो अपने गृह क्षेत्र में दिखलाते, जबकि उनके पास विस्तृत रेतीले भूखण्ड थे।

अतः मुगलपूर्व काल में निर्मित राजपूती भवनों को मुगलनिर्मित मानना अन्धानुकरण मात्र है। हमें अन्धानुकरण(अविद्या) छोड सत्य (विद्या) को प्राप्त करना चाहिए, यही मनुष्य जीवन का धर्म एवं लक्ष्य भी है।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट-

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक **www.aryanirmatrisabha.com/पत्रिका** पर जाएं।

28 जुलाई-26 अगस्त 2018　**श्रावण**　ऋतु- वर्षा

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
उपाकर्म पर्व 26 अगस्त					श्रवण कृष्ण प्रतिपदा 28 जुलाई	धानिष्ठा कृष्ण द्वितीया 29 जुलाई
धानिष्ठा कृष्ण द्वितीया 30 जुलाई	शतभिषा कृष्ण तृतीया 31 जुलाई	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण चतुर्थी 1 अगस्त	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण पंचमी 2 अगस्त	रेवती कृष्ण षष्ठी 3 अगस्त	अश्विनी कृष्ण सप्तमी 4 अगस्त	भरणी कृष्ण अष्टमी 5 अगस्त
स्त्रतिका कृष्ण नवमी 6 अगस्त	रोहिणी कृष्ण दशमी/एकादशी 7 अगस्त	मृगशिरा कृष्ण द्वादशी 8 अगस्त	आर्द्रा कृष्ण त्रयोदशी 9 अगस्त	पुष्य कृष्ण चतुर्दशी 10 अगस्त	आश्लेषा कृष्ण अमावस्या 11 अगस्त	मघा शुक्ल प्रतिपदा 12 अगस्त
पू० फाल्गुनी शुक्ल द्वितीया/तृतीया 13 अगस्त	उ० फाल्गुनी शुक्ल चतुर्थी 14 अगस्त	हस्त शुक्ल पंचमी 15 अगस्त	चित्र शुक्ल षष्ठी 16 अगस्त	स्वाती शुक्ल सप्तमी 17 अगस्त	विशाखा शुक्ल अष्टमी 18 अगस्त	अनुराधाा शुक्ल नवमी 19 अगस्त
ज्येष्ठा शुक्ल दशमी 20 अगस्त	मूल शुक्ल एकादशी 21 अगस्त	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल एकादशी 22 अगस्त	उत्तराषाढ़ा शुक्ल द्वादशी 23 अगस्त	उत्तराषाढ़ा शुक्ल त्रयोदशी 24 अगस्त	श्रवण शुक्ल चतुर्दशी 25 अगस्त	धानिष्ठा शुक्ल पूर्णिमा 26 अगस्त

रामप्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा से...

यह मेरा दृढ़ निश्चय है कि मैं उत्तम शरीर धारण कर नवीन शक्तियों सहित अति शीघ्र ही पुन: भारतवर्ष में ही किसी निकटवर्ती सम्बन्धी या इष्ट मित्र के गृह में जन्म ग्रहण करूँगा, क्योंकि मेरा जन्म-जन्मान्तर उद्देश्य रहेगा कि मनुष्य मात्र को सभी प्रकृति पदार्थों पर समानाधिकार प्राप्त हो। कोई किसी पर हुकुमत न करे। सारे संसार में जनतंत्र की स्थापना हो। वर्तमान समय में भारतवर्ष की अवस्था बड़ी शोचनीय है। अतएव लगातार कई जन्म इसी देश में ग्रहण करने होंगे और जब तक कि भारतवर्ष के नर-नारी पूर्णतया सर्वरूपेण स्वतंत्र न हो जाएँ, परमात्मा से मेरी प्रार्थना होगी कि वह मुझे इसी देश में जन्म दे, ताकि उसकी पवित्र वाणी-'वेदवाणी' का अनुपम घोष मनुष्य मात्र के कानों तक पहुँचाने में समर्थ हो सकूँ। सम्भव है कि मार्ग-निर्धारण में भूल करूँ, पर इसमें मेरा विशेष दोष नहीं, क्योंकि मैं भी तो अल्पज्ञ जीव मात्र ही हूँ। भूल न करना केवल सर्वज्ञ से ही सम्भव है। हमें परिस्थितियों के अनुसार ही सब कार्य करने पड़े और करने होंगे। परमात्मा अगले जन्म में सुबुद्धि प्रदान करे ताकि मैं जिस मार्ग का अनुसरण करूँ, वह त्रुटि रहित ही हो।

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

Pt. Tara Charan opened the discussion, but could not stand Sawami's onslaught for long, and leaving the subject under discussion, began to talk about the revealed knowledge of the Vedas. Swamiji answered his questions once or twice but pointed out to him that he was getting irrelevant during the course of the discussion. Swamiji quoted a passage from the Upanishad (spiritual commentary on Vedas) and showed them the passage at which they felt crestfallen. Vishuddhanand did not heed Swamiji's remonstrance and showed them the latter felt constrained to beat him on his own ground. Finding his associate cornered, Pt. Balashastri hastened to his rescue, and offered to answer the question over which Vishuddhanand had been silenced, but was nonplused. The pandits then played a trick, which as later events disclosed was pre-planned. One pandit, Madhavacharya by names, took out a few leaves from a manuscript which he said was a copy of the Veda Samhita and directed his attention to a passage in that book which sanctioned idol-worship. Having absolutely no idea of his intention Swamiji began to examine the minutes when Vishuddhanand, his associate and the Maharaja of Kashi, stood up. Cries of- Dayanand defeated, Dayanand defeated; were raised and the meeting ended in a wild uproar. The Voice of Dayanand was drowned in the midst of confusion that ensued. Some scoundrels began to throw stones and brickbats at the Swami, but thanks to Kotwal Raghunath Das they were soon dispersed. Unruffled he stood in the midst of that rowdyism wondering at that disgraceful trick that had been played on him. A marble statue could not be less moved by the raging wrath of the crowd. "I had fondly hoped there would be absolute fairness. The way they have behaved is highly unjust and unfair," remarked he. That his adversaries had felt the necessity of resorting to such unenviable methods was a proof indisputable of his moral triumph.

The pundits did not delay in proclaiming this victory from the housetops, and in advertising this fact in newspapers. Truth cannot be suppressed for long, however, and Dayanand was not to be put down by such high handedness and mischief. He stayed on at Kashi, exposed the trick that had been played on him, and went on preaching his doctrines and challenging the pundits to a fair fight but none came forward.

The following appeared in the Hindu patriot of 17th January 1870, in connection with the shastrartha:-"The stronghold of Hindu idolatry and bigotry which, according to Hindu mythology stands on the trident of Shiva, and is, therefore, not liable to the influence of earthquakes, has lately been shaken to its foundation by the appearance of a sage from Gujarat. The name of this great personage Dayanand Saraswati. He has come with the avowed object of giving a death-blow to the Hindu system of worship. He considers the Vedas to be the only books worthy of regard, and styles the Puranas as cunningly devised fables, the inventions of some shrewd Brahmins in a later period for fulfilling their selfish motives. The Vedas says he, entirely ignore idol-worship, and he challenges the pundits and great men of Banaras to meet him in argument. Some time ago, the Maharaja of Ram Nagar held a meeting in which he invited the great pundits and elite of Banaras. To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

अनुभव बहुत अच्छा है। पहली बार इस प्रकार की कार्यशाला/पाठशाला में बैठा हूँ जो कि एक चमत्कार से कम नहीं है। सारी की सारी भ्रांतियाँ दूर हो गयी। जीवन का सही मार्ग मिल गया। ये दो दिन मैं हमेशा याद रखूंगा। ईश्वर के बारे में जो भी 23/06/18 से पहले भ्रम था, अब वह पूरा साफ हो गया है। बहुत अच्छा लगा। इस प्रकार के सत्र करने को अब मैं खुद भी प्रेरित रहूँगा औरों को भी करवाऊंगा।

समय-समय पर मैं सत्र करूंगा और परिवार को भी आर्य का ज्ञान करवाऊंगा। समय निकालकार स्वाध्याय करूंगा। आर्य का पालन करने की कोशिश करूंगा।

नाम: शिवचरण, आयु 34 वर्ष, योग्यता: एम.कॉम., पता: नूह, हरियाणा।

यह मेरा प्रथम सत्र है लेकिन इसमें मैंने बहुत ज्ञान प्राप्त किया क्योंकि यहाँ आकर मैंने यह जाना कि ईश्वर क्या है! धर्म क्या है! अर्थात् क्या कर्म करने योग्य है। आर्य कौन! यह भारत देश क्या है! अत: कहने का तात्पर्य है कि इस सत्र से मैंने अपने चरित्र को बढ़ाया है। और बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त किया है। मैं चाहता हूँ कि मुझे इसमें आने का दोबारा अवसर मिले। मैंने यह भी जाना है कि यही धर्म ऐसा है कि सिर्फ विज्ञान पर आधारित है अन्य कोई भी धर्म ऐसा नहीं है। जितना मैंने सोचा था उससे कहीं अधिक मैंने ज्ञान प्राप्त किया है।

जितना मैंने इस सत्र में ज्ञान प्राप्त किया है तथा मैं प्रेरित होकर अन्य लोगों को आर्य बनने के लिए प्रेरित करूंगा।

नाम: पीयूष शर्मा, आयु :18 वर्ष, योग्यता: 12वीं, पता: नूह, हरियाणा।

सत्र लगाने से मुझे सबसे पहले परमात्मा के दस गुणों का पता चला है, मुझे पता चला कि आत्मा क्या है। मुझे सत्र में आकर बहुत ही अच्छा लगा। परमात्मा सर्वज्ञ, निराकार, एक, सत्, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर आदि का पता चला। सत्र में मुझे आचार्या के विचार बहुत अच्छे लगे। सत्र में आकर हमें बहुत ज्ञान मिला है। उनके विचार सुनकर मेरे अन्दर आर्या बनने की प्रेरणा जागृत हुई। अपने राष्ट्र के बारे में मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ। सत्र में वेदों के ज्ञान की प्रेरणा मिली। सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का मन बना। सुमित्रा आर्या के भजन बहुत अच्छे लगे, जो प्रेरणादायक थे।

इससें सहयोग देने के लिए मैं एक आर्या राष्ट्रसभा बनाना चाहती हूँ। मैं भी सभी महिलाओं को एकत्रित करके उन्हें आर्या बनने के लिए प्रेरणा देना चाहूँगी। और अपने विचारों को उन्हें समझाना चाहूँगी। मैं अपने समाज में बदलाव करके एक प्रकाश की नयी किरण लाना चहती हूँ और जिस तरह से भी निर्मात्री सभा में सहयोग की जरूरत होगी मैं हर प्रकार से सहयोग देना चाहती हूँ।

नाम: रूबी देवी, आयु 32 वर्ष, योग्यता: बी.ए., बी.एड., पता: गंगाटेहडी, करनाल, हरियाणा।

ये सत्र लगाने के बाद हमारा अनुभव काफी परिवर्तित हुआ है। पहले हम अज्ञानता में डूबे हुए थे, पाखण्डों में फंसे हुए थे। काल्पनिक देवी-देवताओं में आस्था रखते थे। सत्र लगाने के बाद हमें वेदों का ज्ञान, ईश्वर की सत्ता और अपने देश की रक्षा करने का ज्ञान प्रात हुआ। अब हम एक जुट होकर अपने देश को बचाएंगे और अपने देश की रक्षा करेंगे। और जो संसार में ढोंग, पाप, अत्याचार फैला हुआ है उसे दूर करने का हम जी-जान लगाकर कोशिश करेंगे। सत्र लगाने के बाद हम अंधकार से निकलकर उजाले में आ गए। इसलिए सभी आर्यो को नमस्कार, धन्यवाद!

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा का प्रचार-प्रसार करने में हम काफी मेहनत व सभा में आर्थिक सहायता करने की कोशिश करेंगे।

नाम: निशा, आयु 32 वर्ष, योग्यता: 12वीं, पता: गंगाटेहडी, करनाल, हरियाणा।

मुझे कई महिनों से एक मार्ग की तलाश थी, जिससे मुझे हिन्दुओं की जाति वर्ण व भेद-भाव खत्म करना था। पर ईश्वर की प्रेरणा से मुझे आर्य समाज में वह मार्ग मिला जो हिन्दुओं की एक जाति व पंथ खत्म कर सत्य मार्ग व पवित्रता के द्वारा राष्ट्र के हित में उनका उपयोग किया जा सकता है। हिन्दुओं का समाधान अब उनको आर्य बनकर एक होना तथा राष्ट्र का पूरा निर्माण करने में है।

नाम: मजोज शाहु, आयु 29 वर्ष, योग्यता: बी. टेक, पता: जिला छिन्दवाड़ा, मध्य प्रदेश।

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	13 जुलाई	दिन-शुक्रवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-पुनर्वसु
पूर्णिमा	27 जुलाई	दिन-शुक्रवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-उत्तराषाढ़ा
अमावस्या	11 अगस्त	दिन-शनिवार	मास-श्रावण	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-आश्लेषा
पूर्णिमा	26 अगस्त	दिन-रविवार	मास-श्रावण	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-धनिष्ठा

संध्या काल

आषाढ़- मास, वर्षा ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(29 जून 2018 से 27 जुलाई 2018)
प्रात: काल: 5 बजकर 30 मिनट से **(5.30 A.M.)**
सांय काल: 7 बजकर 15 मिनट से **(7.15 P.M.)**

श्रावण मास, वर्षा ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(28 जुलाई 2019 से 26 अगस्त 2019)
प्रात: काल: 5 बजकर 45 मिनट से **(5.45 A.M.)**
सांय काल: 7 बजकर 00 मिनट से **(7.00 P.M.)**

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्रि सभा के आचार्यो द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।